विचार बिन्दु

उत्साह मनुष्य की भाग्यशीलता का पैमाना है। –तिरुवल्लुवर

देश की कुल जीडीपी और प्रति व्यक्ति जीडीपी में फर्क

कहा जा रहा है कि भारत ने जापान को पीछे छोड़ते हुए दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था का स्थान लगभग हासिल कर लिया है। यह इस आधार पर बताया जा रहा है कि 2025 में भारत का सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) 4.187 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंच गया है, जबकि जापान का जीडीपी 4.186 ट्रिलियन डॉलर है। यह जानकारी अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष की अप्रैल 2025 की 'वर्ल्ड इकोनॉमिक आउटलुक' रिपोर्ट में दी गई है। इसी के आधार पर अर्थशास्त्री आगे की संभावनाओं का हिसाब लगाने में जुट गये हैं। उनका अनुमान है कि भारत की अर्थव्यवस्था जिस गति से बढ़ रही है, उससे हमारा देश 2028 तक जर्मनी को पछाड़ कर अमरीका और चीन के बाद दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन सकता है। भारत, जो कभी एक विकासशील देश के रूप में जाना जाता था और जिसकी करीब दो प्रतिशत विकास वाली अर्थव्ययवस्था की धीमी दर को हिन्दू ग्रोथ रेट कह कर मजाक उड़ाया जाता था, वह आज विश्व की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में शामिल हो चुका है। पिछले दस वर्षों में भारत ने जिस रफ्तार से आर्थिक उन्नति करते हुए अपनी जीडीपी को दुगना कर लिया है, वह न केवल देशवासियों के लिए गर्व का विषय है, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी भारत की साख को मजबूती देने वाला है। इसके पीछे कई महत्वपूर्ण कारण हैं। कुछ लोग इसे केंद्र सरकार की नीतियों– जैसे डिजिटल इंडिया, मेक इन इंडिया और इन्फ्रास्ट्रक्चर पर विशेष ज़ोर का परिणाम मानते हैं। वहीं दूसरी ओर, कुछ आलोचक इस विकास को सतही मानते हैं। उनका तर्क है कि जब तक हर नागरिक को रोज़गार, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाएं नहीं मिलतीं, तब तक भारत विकसित देशों के बराबर नहीं हो सकता। वे कहते हैं कि हैं कि भले ही कुल जीडीपी के मामले में भारत ने दुनिया की तीसरी अर्थव्यवस्था का स्तर पा लिया है, किन्तु प्रति व्यक्ति जीडीपी के मामले में वह बहुत नीचे 143वें स्थान पर है। देश की जीडीपी और प्रतिव्यक्ति जीडीपी दोनों आर्थिक सूचकांक हैं, लेकिन इन दोनों का मतलब और उद्देश्य अलग-अलग होता है। इनके बीच अंतर क्यों होता है, इसे समझना चाहिए। जीडीपी और प्रति व्यक्ति जीडीपी के बीच मुख्य अंतर यह है कि जीडीपी किसी देश द्वारा उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं का कुल मूल्य है, जबकि प्रति व्यक्ति जीडीपी देश के प्रति व्यक्ति आर्थिक उत्पादन का एक माप है। इसका अर्थ यह हुआ कि किसी देश की आबादी का कितना हिस्सा आर्थिक उत्पादन में लगा है, यह उसका भी माप होता है। उदाहरण के लिए भारत की जीडीपी अगर 300 लाख करोड़ रुपये है, तो यह देश की कुल कमाई है। जीडीपी को देश की कुल जनसंख्या से विभाजित कर दिया जाए, तो जो आंकड़ा आता है वह प्रतिव्यक्ति जीडीपी कहलाता है। यह दर्शाता है कि एक औसत व्यक्ति पर कितनी आय बनती है। इससे अर्थशास्त्री तथा नीति निर्माता जीवन स्तर और आर्थिक समृद्धि को मापते हैं। इससे एक चीज स्पष्ट है कि यदि किसी देश की जनसंख्या बहुत ज्यादा है, तो चाहे जीडीपी अधिक हो, प्रतिव्यक्ति जीडीपी कम हो सकती है। जैसे भारत की कुल जीडीपी बहुत बड़ी हो जाने पर भी यहां जनसंख्या ज़्यादा होने से प्रति व्यक्ति औसत कम रह जाता है। उदाहरण से समझें। अमेरिका की जीडीपी भारत से बड़ी है और जनसंख्या कम है, इसलिए उसकी प्रतिव्यक्ति जीडीपी भी बहुत ज्यादा है। अधिक विकसित देशों और छोटे, अमीर देशों में प्रति व्यक्ति जीडीपी अधिक होती है। भारत जैसे उच्च जीडीपी लेकिन अधिक आबादी वाले देश में स्वाभाविक रूप से प्रति व्यक्ति जीडीपी मूल्य कम दिखेगी। विश्व बैंक के आंकड़ों के अनुसार, मोनाको, लिकटेंस्टीन, लक्जमबर्ग, बरमूडा, केमैन आइलैंड्स और स्विट्जरलैंड छह देश/क्षेत्र हैं, जिनमें प्रति व्यक्ति जीडीपी सबसे अधिक है। इसलिए कोई आश्चर्य नहीं कि यदि किसी देश की जनसंख्या अधिक है तो उसका प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद मूल्य कम हो सकता है।

भारतीय अर्थव्यवस्था के आंकड़ों को एक और नज़रिए से भी देखा जा सकता है। वित्तीय वर्ष 2025 में भारत की प्रति व्यक्ति शुद्ध आय लगभग दो लाख रुपये थी जिसमें पिछले वर्ष की तुलना में वार्षिक वृद्धि दर 8.6 प्रतिशत रही। यहां यह देखना दिलचस्प होगा कि भारत में प्रतिव्यक्ति की यह दर जीडीपी की 6.4 प्रतिशत के आसपास की वार्षिक वृद्धि दर से अधिक है। इसलिए ऐसा नहीं है कि प्रतिव्यक्ति आय नहीं बढ़ रही है। यह भी सच है कि देश की जीडीपी उसकी समृद्धि का सूचक नहीं होती, मगर वह देश की कुल आर्थिक ताकत जरूर बताती है। दूसरी तरफ प्रतिव्यक्ति जीडीपी जीवन स्तर और लोगों की औसत आर्थिक स्थिति को दर्शाती है। अर्थशास्त्रियों के अनुसार निम्न और उच्च आय स्तर वाले देशों के व्यक्तियों के लिए आय का उपभोग के लिए अधिक महत्व नहीं होता है, लेकिन मध्यम आय स्तर वाले देशों में यह संबंध होता है। निम्न आय वाले देशों के लोग अपने बजट का उपयोग मुख्य रूप से उपभोग के लिए करते हैं, क्योंकि उन्हें मुख्य रूप से अपनी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने की जरूरत होती है। उच्च आय वाले देशों के लोगों के पास खर्च करने के लिए अधिक संसाधन उपलब्ध होते हैं और वे उपभोग के साथ-साथ निवेश भी बढ़ा सकते हैं। साथ ही, आय का एक मध्यम स्तर लोगों को अपनी भावी जीवन शैली को बेहतर बनाने के लिए अधिक बचत करने को बढ़ावा दे सकता है। इसीलिए उपभोग, आय और सकल घरेलू उत्पाद के बीच संबंध सभी देशों में महत्वपूर्ण माना जाता है। निम्न और मध्यम आय वाले देशों के लिए यह और भी अधिक महत्वपूर्ण होता है। हम इस परिणाम को इस तथ्य के रूप में ले सकते हैं कि उपभोग और आय का अधिक स्तर जीवन स्तर को बढ़ाता है, लेकिन उच्च आय वाले उन देशों के लिए यह कम महत्व का इसलिए होता है क्योंकि वहाँ के लोग निवेश और अनुसंधान एवं विकास गतिविधियों में अधिक कुशल होते हैं, विशेष रूप से मानव पूंजी में। अर्थशास्त्री एक मनोवैज्ञानिक नियम की बात भी करते हैं, जिसके अनुसार जैसे-जैसे आय का स्तर बढ़ता है, आय और उपभोग के बीच का अंतर भी बढ़ता है। अनुभवजन्य साक्ष्य भी ऐसा ही बताते हैं। यह भी कि उपभोग की आदतें आय के स्तर पर निर्भर करती हैं। उपभोग और आय संसाधन का स्तर प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद के निर्माण में अलग-अलग योगदान करते हैं। भारत की अर्थव्यवस्था का तेज़ी से बढ़ना कोई संयोग नहीं है। एक सुव्यवस्थित रणनीति, मेहनत, नवाचार और सही नेतृत्व के बिना ऐसा होना संभव नहीं है। आशावादी लोग मानते हैं कि यदि यही प्रवृत्ति बनी रही, तो वह दिन दूर नहीं जब भारत विश्व की शीर्ष तीन अर्थव्यवस्थाओं में शामिल हो जाएगा।

उपभोग और आय संसाधन का स्तर प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद के निर्माण में अलग-अलग योगदान करते हैं। भारत की अर्थव्यवस्था का तेज़ी से बढ़ना कोई संयोग नहीं है। एक सुव्यवस्थित रणनीति, मेहनत, नवाचार और सही नेतृत्व के बिना ऐसा होना संभव नहीं है। आशावादी लोग मानते हैं कि यदि यही प्रवृत्ति बनी रही, तो वह दिन दूर नहीं जब भारत विश्व की शीर्ष तीन अर्थव्यवस्थाओं में शामिल हो जाएगा।

लेकिन हर बार जब इस तरह के आंकड़े सामने आते हैं, तो आम लोगों के मन में यह सवाल ज़रूर उठता है कि क्या इस आर्थिक तरक़्क़ी का असर उनकी रोज़मर्रा की ज़िंदगी पर भी पड़ा है? यह ज़रूर है कि अगर देश में आर्थिक गतिविधियां बढ़ती हैं तो यह उम्मीद स्वाभाविक ही की जाती है कि इसका फ़ायदा सभी वर्गों तक पहुंचेगा। लेकिन इसके दो अहम पहलू हैं, जिन्हें नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। एक है देश के युवाओं की बहुत बड़ी आबादी को लाभकारी रोजगार मिले और दूसरा बढ़ रही संपत्ति का आबादी में समान बंटवारा हो। हर हाथ को रोजगार मिले इसके लिए शिक्षा और कौशल का प्रशिक्षण महत्वपूर्ण है। देश के पास मानव संसाधन की कमी नहीं है किन्तु उसे हम अपनी पूंजी नहीं बना पा रहे है। शिक्षा में भयानक असामानता है जिसका नतीजा है आर्थिक गतिविधियों में आसमान भागीदारी। इसके लिए जहां सरकार की असफलता है तो जनमानस की मानसिकता भी काम जिम्मेवार नहीं है। ज़्यादातर युवाओं के लिए नौकरी का मतलब सिर्फ़ सरकारी नौकरी है। अगर कोई युवक 20-25 साल की उम्र से लेकर 30-35 साल की उम्र तक सिर्फ़ सरकारी नौकरी की तैयारी करता रहे और फिर कहे कि वो बेरोज़गार है, तो इसमें कोई कुछ नहीं कर सकता सरकार भी नहीं। दूसरी तरफ एक बड़ी ग्रामीण आबादी अब भी कृषि पर आश्रित है क्योंकि उसके पास कोई दूसरा कौशल है नहीं। कृषि क्षेत्र जो देश की अर्थव्यवस्था का 80 प्रतिशत तक हुआ करता था उसकी भागीदारी 14 प्रतिशत के आसपास आ गई है। मगर उस पर 48 प्रतिशत आबादी का बोझ है। ऐसे में इस आबादी की आय में बढ़ोतरी उतनी तेजी से नहीं नजर आएगी जितनी जीडीपी के आंकड़ों में दिखती है। इसीलिए प्रतिव्यक्ति जीडीपी की रेंकिंग में भारत नीचे ही खड़ा नजर आएगा। भारत में शिक्षा की असमानता दूर करनी होगी। हालांकि भारत के युवाओं की तकनीकी क्षमता ने स्टार्टअप कल्चर और सॉफ्टवेयर सेवाओं के निर्यात ने वैश्विक बाजार में भारत को एक प्रमुख खिलाड़ी बना दिया है, मगर ये युवा अधिकतर उन सौभाग्यशाली वर्गों से आते हैं जिनकी प्राथमिक पढ़ाई बेहतर स्कूलों में हुई और जो उच्च शिक्षा के अच्छे संस्थानों में जा पाए। वहीं एक दूसरा भारत भी है जिसमें बच्चे बेहतर गुणवत्ता वाली शिक्षा पाने से शुरू से ही वंचित रह जाते हैं और फिर पिछड़ते ही चले जाते हैं। उन्हें मुख्यधारा में लाने के लिए हाल ही में दिवंगत हो गये जनसंख्या विशेषज्ञ डॉ. देवेन्द्र कोठारी ने मानव संसाधन विकास का एक बेहतरीन मॉडल एचडी प्लस का दिया था जिसकी तरफ झांकने की नीति निर्माताओं को कभी फुरसत नहीं मिली। समृद्धि में समान बंटवारा समान शिक्षा और स्वास्थ्य की व्यवस्था से ही होगा, जिसे संविधान के निर्देश के मुताबिक राज्य को करना है।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

कबीर का मार्ग

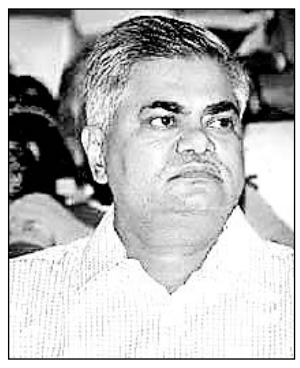

राजेश्वर सिंह

कबीर मध्यकालीन भक्ति आंदोलन की निर्गुण धारा के प्रतिनिधि संत कवि हैं। वे पूजा-पाठ, अनुष्ठान व कर्मकांड का विरोध करते हैं, ब्रह्म की लीला का प्रसार जीवन और जगत में देखते हैं, शास्त्र ज्ञान पर प्रत्यक्ष अनुभव जन्य आत्मज्ञान व ब्रह्म ज्ञान को वरीयता देते हैं, आत्मज्ञानी व ब्रह्मज्ञानी सद्गुरु के द्वारा प्रदत्त मार्गदर्शन के महत्व का प्रतिपादन करते हैं, सांप्रदायिकता व जातिवाद पर प्रहार करते हैं तथा परम सुख व शांति की प्राप्ति के लिए अनासक्त कर्म, सदाचार, दया, संतोष, विनम्रता, समदर्शिता व सर्वोपरि प्रेम के पथ पर चलने का संदेश देते हैं।

कबीर कहते हैं कि परमात्मा ने ही अपने स्वरूप को संपूर्ण विश्व में प्रसारित किया है, उसी किरण से नवीन सृष्टि की धारा निःसृत होती है तथा उन्होंने ही समस्त रूपाकारों में स्वयं को व्याप्त कर रखा है। वस्तुत इस जगत में जितने जीव हैं, वह सब उन्हीं के जीवंत रूप हैं। उनका यह भी मानना है कि प्रभु जिस पर कृपा करते हैं, वही उनको प्राप्त कर पाता है और इसके उपरांत वह जन्म और मृत्यु के बंधन से मुक्त हो जाता है। कबीर ने इस परम पद की प्राप्ति के लिए कुछ पात्रताएं भी निर्धारित की हैं। वह कहते हैं कि सांसारिक कामकाज में अनासक्त, समस्त जीवों को आत्मवत स्वीकार करने वाला, अहंकार व दम्भ से मुक्त, सदाचार व दयालुता से युक्त, विनम्र, संतोषी व समदर्शी मनुष्य ही परमात्मा को प्राप्त कर पाते हैं और इन सद्गुणों का उदय भी बिना उनकी कृपा के संभव नहीं हो पाता।

परमात्मा की कृपा को प्राप्त करने के लिए कबीर कठोर साधना मार्ग पर प्रवृत्त होने के लिए कहते हैं। उनके अनुसार इस देह क्षेत्र में काम, क्रोध, मद और लोभ का सत्य, संतोष व शील के साथ महायुद्ध छिड़ा हुआ है। साधक नाम रूपी खड्ग से इन कुप्रवृत्तियों पर निरंतर प्रहार कर विजय प्राप्त करता है। इस विजय को कबीर ज्ञान के सूर्योदय के रूप में व्याख्यायित करते हुए कहते हैं कि जहां सूर्य प्रकाशित हो,वहां रात नहीं होती। इसी प्रकार जहां ज्ञान का उदय होता है वहां अज्ञान नष्ट हो जाता है। जहां कामनाएँ प्रबल हों, वहां विशुद्ध प्रेम नहीं होता, किंतु परमात्मा के प्रति पूर्ण समर्पण जन्य प्रेम सांसारिक कामनाओं एवं वासनाओं का विनाश कर देता है।

कबीर शास्त्र ज्ञान पर अनुभवजन्य आत्मज्ञान व ब्रह्म ज्ञान को वरीयता देते हैं। उनके अनुसार संस्कृतज्ञ व शास्त्रज्ञ यदि कामना व तृष्णा के वशीभूत हैं तो फिर संस्कृत व शास्त्रों का अध्ययन व्यर्थ है। इसी प्रकार उन्होंने तीर्थ स्नान की व्यर्थता तथा धर्म ग्रंथों के मात्र शब्द भंडार होने का भी उल्लेख किया है। वह केवल अनुभवजन्य बातें करते हैं, क्योंकि वह अच्छी तरह जानते हैं कि अन्य सारी बातें खोखली और मिथ्या है।

यह सुनकर उन्हें हँसी आती है कि पानी में रहकर भी मछली प्यासी है। घर में पड़ी वस्तु को तो आदमी देख नहीं पाता और विषादग्रस्त होकर अनावश्यक वन वन भटकता रहता है। बात यह है कि मनुष्य चाहे काशी जाये अथवा मथुरा, अगर उसमें आत्मज्ञान नहीं है तो पूरा संसार उसके लिए मिथ्या है। उनके अनुसार परमात्मा किसी मंदिर मस्जिद, काबा या कैलाश में, किसी क्रिया, कर्म, योग या वैराग्य में नहीं है, वह सर्वत्र तथा सबके समीप समुपस्थित है, वह समस्त प्राणियों की एक-एक श्वास में है और अगर कोई सच्चे हृदय से संधान करता है तो वह उसे तुरंत प्राप्त हो जाता है। कबीर कहते हैं कि जब परमात्मा अपने आप को प्रकट करता है तो वह सब भी दिखाई देने लगता है जो हम अपनी आँखों से नहीं देख सकते जैसे बीज में वृक्ष दिखाई देता है और वृक्ष में छाया, आकाश में शून्य और शून्य में अनंत आकार, ब्रह्म में जीव और जीव में ब्रह्म। वह स्वयं ही बीज है, स्वयं ही वृक्ष है और स्वयं ही अंकुर, फूल, फल और छाया है।वही सूर्य है, किरण है और प्रकाश भी। कबीर इस प्रकार आत्मा में परमात्मा, परमात्मा में बिंब व बिंब में प्रतिबिंब को देखने में लीन हैं।

आत्मज्ञान की प्राप्ति के लिए कबीर सद्गुरू के महत्व का प्रतिपादन करते हैं। कबीर के अनुसार सद्गुरु संत वही है जो आंखों को न दिखाई देने वाले का दर्शन कराता है तथा जो बाहरी पूजा पाठ से मुक्त करके सहज समाधि सिखाता है। वह दरवाजे बंद करके नहीं बैठता, सांस रोकने का अभ्यास नहीं करता और संसार को त्यागने का उपदेश नहीं देता। सद्गुरु ऐसा मार्ग दिखाता है जिसमें मनुष्य कर्म करने के बाद भी निष्कर्म रहता है, उसे तन को त्रास नहीं देना पड़ता तथा सांसारिक कर्म के साथ-साथ आध्यात्मिक साधना भी चलती रहती है।

कबीर संतों की जाति न पूछने के लिए भी कहते हैं। उनके अनुसार साधु 36 क़ौम में हो चुके हैं। नाई, धोबी, बलाई इत्यादि सभी जातियों में साधु हो चुके हैं। उन्ही में संत रैदास हुए हैं और उन्ही में स्वपच सुदर्शन भी। कबीर इसी पद में यहां तक कहते हैं कि बेकार में हिंदू और मुस्लिम रूपी दो धर्म बन गए हैं, जिनमें कोई अंतर नहीं। एक अन्य पद में कबीर कहते हैं कि अल्लाह और राम अलग-अलग कैसे हो सकते हैं? एक ही सोने से सब जेवर बनाए गए हैं तो उनमें दो भाव कैसे हो सकते हैं? कोई हिंदू कहलाता है, कोई मुसलमान पर हमारे शरीर एक ही मिट्टी से बने हैं।

समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव व विषमता पर कठोर प्रहार करते हुए कबीर कहते हैं कि जो जाति पूछ कर पानी पीते हैं, वह मूर्ख हैं। मृतकों के शव सड़कर मिट्टी हो जाते हैं और उसी मिट्टी के बर्तन में पानी रखा जाता है। इसी पानी में कछुए और घड़ियाल बच्चे देते हैं और उनका खून उसी पानी में मिल जाता है। नदी के पानी में सारी गंदगी बहकर आती है और जानवरों तथा इंसानों के शव भी इसमें सड़ते हैं लेकिन छुआछूत केवल जीवित मनुष्यों से माना जाता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि कबीर का मार्ग निष्काम कर्म, सदाचार, मानव मात्र के प्रति प्रेम, जीवदया, करुणा, परोपकार व सत्य निष्ठा का मार्ग है। वे कुरीति, पाखंड और अंधविश्वास पर प्रहार करते हैं तथा श्रमपूर्वक आजीविका अर्जन के पक्षधर हैं। वे भौतिक जीवन के कंटकाकीर्ण पथ पर आरूढ रहकर आध्यात्मिक साधना में प्रवृत्त होने का प्रतिपादन करते हैं,सद्गुरु से मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए कहते हैं, विभिन्न मतों की तात्विक एकता का अनुभव करते हैं और मानव मात्र की समानता व समस्त प्राणियों के प्रति सद्व्यवहार का उपदेश देते हैं। कबीर का यह मार्ग वैसे तो सहज, सरल और सुगम प्रतीत होता है किंतु इस पर चलना कठिन काम है। अगर हम मानवता का कल्याण चाहते हैं तो इस मार्ग का अनुसरण करना ही होगा।

-राजेश्वर सिंह,
आईएएस (सेवानिवृत्त)

जल संरक्षण एवं जल प्रबंधन का प्रेरणा स्त्रोत है मेवाड़, सदियों से हो रहे हैं जल संरक्षण की दिशा में प्रयास

विनय सोमपुरा

राजस्थान के दक्षिणांचल में स्थित मेवाड़ सदियों से न केवल राजस्थान अपितु पूरे विश्व के लिए जल संरक्षण और जल प्रबंधन का प्रेरणा स्त्रोत रहा है। मेवाड़ में रियासतकाल से ही जल संरक्षण की दिशा में ठोस प्रयास किए गए है जिसका लाभ आज तक आमजन को मिल रहा है। समय-समय पर विदेशी विषय विशेषज्ञों ने भी मेवाड़ के जल प्रबंधन का लोहा माना है। आशा की जाती है कि भजनलाल शर्मा सरकार का 5 जून से 20 जून तक संचालित किया जस रहा वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान मेवाड़ की इस समृद्ध परम्परा को अधिक विस्तार देगा।

मेवाड़ प्राचीनकाल से ही वर्षा जल संचय और जल प्रबंधन की मिसाल रहा है। रियासत काल में शासकों ने दूरदर्शिता के साथ यहां के जलाशयों के निर्माण और नदियों को जोड़ने के भागीरथ प्रयास किए, इसकी बदौलत सदियों बाद भी उदयपुर में पेयजल संकट के हालात नहीं बनते हैं। संभवतया जल प्रबंधन के इससे अच्छे प्राचीन उदाहरण और कहीं नहीं मिलते हैं। यहां सदियों पहले से ही वर्षा जल को वृहद् स्तर पर सहेजने की शुरूआत हो चुकी थी। अरावली की पहाड़ियों से पश्चिम की ओर बहने वाले पानी को सहजने के लिए थोड़ी-थोड़ी दूर पर तालाब बनाए गए। मदार बड़ा और मदार छोटा तालाब भरने के बाद इनका पानी थूर की पाल से चिकलवास पिकअप वियर से मदार नहर होते हुए फतहसागर झील को भरता है। मदार नहर की क्षमता से ज्यादा पानी आने पर चिकलवास पिकअप वियर से आयड़ नदी होते हुए मदार का पानी उदयसागर पहुंचता है। पानी की आवक ज्यादा होने पर स्वरूप सागर लिंक नहर से फतहसागर भरा जाता है। बड़ी तालाब के छलकने पर इसका पानी भी फतहसागर में पहुंचता है। पिछोला और फतहसागर भरने के बाद पानी गुमानिया नाल से आयड़ नदी होते हुए उदयसागर पहुंचता है। यहां से पानी बेड़च नदी होते हुए वल्लभनगर बांध को भरता है। उसके बाद पानी चित्तौड़ जिले में स्थित बड़गांव बांध और घोसुंडा बांध को भरता है। इन बांधों की पूर्ति होने के बाद उदयपुर की झीलों से पानी बनास नदी होते हुए बीसलपुर बांध पहुंचता है।

इसके अलावा नदियों को जोड़ने की पहल भी 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में सर्वप्रथम मेवाड़ में हुई। महाराणा फतहसिंह ने वर्ष 1890 में उदयपुर शहर से 6 किलोमीटर दूर चिकलवास गांव के समीप आहड़ नदी पर एक बांध बनवाया। वर्षा ऋतु में प्रवाहित अतिरिक्त जल को फतहसागर झील तक पहुंचाने के लिए चिकलवास नहर का निर्माण करवाया। इसके अतिरिक्त राणा राज सिंह- प्रथम ने तीर्थ स्थल उबेश्वर क्षेत्र से निकलने वाली उबेश्वर नदी को मोडकऱ मोरवानी नदी में मिला दिया। इस प्रकार यह जल जनासागर तथा फतह सागर में पहुंचा। उदयपुर शहर में गोवर्धन सागर, दूध तलाई, पिछोला झील, अमर कुण्ड, कुम्हारिया तालाब, रंगसागर, स्वरूप सागर तथा फतहसागर जलाशयों का निर्माण जल प्रबन्धन की दृष्टि से विश्वभर में श्रेष्ठ उदाहरण हैं।

मेवाड़ के जल प्रबंधन कौशल को विदेशी जल वैज्ञानिकों के दल ने भी स्वीकारा है। वर्ष 2021-22 में उदयपुर आए वैज्ञानिकों के दल ने अपने अध्ययन में पाया कि मेवाड़ में सदियों पहले जिस दूरदर्शिता के साथ जल प्रबंधन के क्षेत्र में काम हुआ, वह अद्भूत है। यहां हर साल 6328 एमसीएफटी वर्षा जल सहेजा जाता है, जो अपने आप में अनूठा उदाहरण है। मदार बड़ा तालाब की भराव क्षमता 84 एमसीएफटी, मदार छोटा की 30, बड़ी तालाब की 371, देवास प्रथम की 126, आकोदड़ा की 302, मादड़ी की 85, फतहसागर की 427, पिछोला की 483, गोवर्धन सागर की 9, उदयसागर की 1100, वल्लभनगर बांध की 1076, बड़गांव की 1112 तथा घोसुंडा की 1123 एमसीएफटी है। जल संरक्षण और जल प्रबंधन के लिए जलशक्ति मंत्रालय एवं इलेट्स टेक्नोमीडिया की ओर से आयोजित नेशनल वाटर इनोवेशन समिट एंड अवाड्र्स कार्यक्रम में उदयपुर जिले को उत्कृष्ट वर्षा जल संग्रहण के लिए नेशनल वाटर इनोवेशन अवॉर्ड से पुरस्कृत किया गया। इसके अतिरिक्त उदयपुर मे सफल व परिणाम मूलक प्रयोग के बाद जल प्रबंधन मे जन भागीदारी बढ़ाने के माय वेल मोबाइल एप को जल शक्ति मंत्रालय ने देश भर के लिए जारी किया है।

प्राचीन काल से ही जल प्रबंधन पर किए गए सार्थक प्रयासों के चलते मेवाड़ पूरे देश में रोल मॉडल के रूप में उभरा है। इसी कारण केंद्रीय जल शक्ति मंत्रालय ने दूसरी ऑल इण्डिया राज्य जल मंत्रियों की वाटर कांफ्रेन्स का आयोजन 18 व 19 फरवरी को उदयपुर में किया। इसमें केंद्रीय जल शक्ति मंत्री सीआर पाटिल, मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा सहित विभिन्न राज्यों व केंद्र शासित प्रदेषों के जल मंत्रियों ने भाग लिया था। रियायतकाल से प्रेरणा पाकर उदयपुर आजादी के बाद भी जल संचय एवं जल प्रबंधन के क्षेत्र में अग्रणी बना हुआ है। आधुनिक दौर में देवास परियोजना, जवाई-जयसमंद प्रोजेक्ट तथा माही-अनास जैसी परियोजनाएं न केवल उदयपुर सहित समूचे वागड़-मेवाड़ और मारवाड़ की जल आवश्यकताओं को पूर्ण करेंगी अपितु आने वाली पीढियों को जल प्रबंधन की प्रेरणा देने के लिए मील का पत्थर साबित होंगी।

देवास परियोजना: उदयपुर की जीवन रेखा बन कर उभरी देवास परियोजना रियासतकालीन जल संरक्षण और जल प्रबंधन सोच का आधुनिक संस्करण कही जा सकती है। उदयपुर शहर की तत्कालीन पेयजल आपूर्ति मांग सुनिश्चित करने हेतु वर्ष 1973-74 में देवास- प्रथम (गोराणा बाँध) का निर्माण किया गया, जिसकी कुल क्षमता 120 एमसीएफटी है। मुख्यंमत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार ने उदयपुर को देवास परियोजना के तृतीय एवं चतुर्थ चरण की सौगात दी है। देवास तृतीय परियोजना के अन्तर्गत उदयपुर जिला के गोगुन्दा तहसील के नाथियाथाल गांव के निकट 703 एमसीएफटी क्षमता का देवास तृतीय बांध का निर्माण प्रस्तावित है। इससे 11.04 लम्बी सुरंग का निर्माण कर देवास द्वितीय (आकोदडा बांध) में जल अपवर्तन किया जायेगा। पूर्व निर्मित आकोदडा बांध एवं सुरंग से उदयपुर शहर की पिछोला झील में जल अपवर्तन होगा। देवास चतुर्थ परियोजना के अन्तर्गत गोगुन्दा तहसील के अम्बावा गांव के निकट 390 एमसीएफटी क्षमता का देवास चतुर्थ बांध का निर्माण कर इससे 4.3 किलोमीटर सुरंग का निर्माण कर देवास तृतीय बांध से जोड दिया जाएगा। द्वितीय (आकोदडा बाँध) एवं सुरंग के माध्यम से पिछोला झील में जल अपवर्तन किया जा सकेगा। देवास तृतीय एवं चतुर्थ परियोजना की अनुमानित लागत 1690.55 करोड है। इससे 1000 एमसीएफटी वार्षिक जल अपतर्वन उदयपुर शहर की झीलों में किया जा सकेगा।

भारत रत्न पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के नदियों को जोड़ कर अकाल और बाढ़ की समस्या के स्थाई समाधान के सपनों को साकार करने की दिशा में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राजस्थान सरकार ने कदम बढ़ा दिए हैं। राज्य सरकार की बजट 2024-25 के तहत वागड़-मेवाड़ में नदी बेसिन से जुड़ी दो परियोजनाओं की डीपीआर बनाई जा रही है। प्रथम परियोजना के तहत प्रतापगढ़ जिले में जाखम नदी पर बने जाखम बांध से जयसमंद तथा जयसमंद से चित्तौड़गढ़ और राजसमंद जिलों के विभिन्न बांधों को जोड़ते हुए पानी पहुंचाना प्रस्तावित है। जाखम बांध पर 3 मीटर ऊंचे रेडियल गेट लगाने के प्रस्ताव है जिससे इस बांध पर 1000 एमसीएफटी अतिरिक्त पानी का भराव किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त जाखम नदी की सहायक नहदी सुकली एवं करमाई नदी पर बांध बनाकर क्रमशः 1000 एमसीएफटी एवं 750 एमसीएफटी पानी का भराव किया जा सकता है। जाखम बांध तथा सलूम्बर जिले में स्थित जयसमंद झील के जल स्तर में 60 मीटर का अंतर है। इससे कुल 2750 एमसीएफटी अतिरिक्त पानी जाखम बांध से करीब 106 किलोमीटर लंबी फीडर बनाकर सलूम्बर जिले की जयसमन्द झील में ठोविटी से पानी लाया जा सकेगा। जयसमंद झील से बड़गांव बांध (जिला उदयपुर) तक 50 कि.मी. लम्बे पाइपलाइन सिस्टम से 178.50 मीटर लिफ्ट के माध्यम से पानी पहुंचाया जाना प्रस्तावित है। बड़गांव बांध से 42 कि.मी. लम्बी फीडर बनाकर यह पानी रेलमगरा नाले (जिला राजसमंद) में डाला जाएगा। रेलमगरा नाले से पूर्व निर्मित फीडर सिस्टम द्वारा पानी धमाणा बांध, चित्तौड़गढ़ जिले के कपासन बांध, भूपालसागर बांध, अरनिया बांध, जाशमा बांध, डिण्डोली, मातृकुण्डिया, सिंहपुर एवं बनाकिया बांध को भरा जा सकेगा। मातृकुण्डिया बांध से पूर्व में निर्मित मेजा फीडर के माध्यम से मेजा बांध तक जल अपवर्तन किया जाएगा। इसके अलावा नंदसमंद तक पानी पहुंचाने का भी प्रस्ताव है। दूसरी परियोजना के तहत तैयार की जा रही डीपीआर में माही, सोम और अनास नदियों का अधिशेष जल जवाई बांध तक पहुंचाना प्रस्तावित है। इसमें अनास नदी, माही नदी और सोम नदी के अधिशेष पानी को ट्रेप करके जयसमंद झील तक पहुंचाया जाएगा। वहां से अतिरिक्त पानी को सेई बांध में पहुंचाया जाएगा। वहां से सेई टनल के माध्यम से पानी जवाई बांध तक पहुंचाया जा सकेगा। सेई टनल की गहराई बढ़ाकर टनल क्षमता का विस्तार किया जा चुका है।

विनय सोमपुरा
सहायक जनसंपर्क अधिकारी,
सूचना एवं जनसंपर्क विभाग
उदयपुर

वाटर होल पद्धित से आज होगी वन्यजीव गणना

जोधपुर, (कासं)। प्रदेश में 11 जून को पूर्णिमा के दिन वाटर होल पद्धित से वन्यजीवों की गणना की जाएगी। ग्यारह से बारह जून को वनकर्मियों के साथ वन्यजीव प्रेमी मचान पर बैठेंगे और वाटर पॉइंट्स पर नजर रखकर वन्यजीवों की गणना करेंगे। ग्यारह जून को सुबह आठ बजे से वन्यजीव गणना शुरू होगी। बारह जून को गुरुवार सुबह आठ बजे तक वन्यजीवों की काउंटिंग की जाएगी। इसके बाद वन्यजीवों की गणना के आंकड़े वन मुख्यालय अरण्य भवन भेजे जाएंगे। वन्यजीव गणना पिछले महीने वैशाख पूर्णिमा के दिन होनी थी, लेकिन बारिश का मौसम होने के कारण स्थगित कर दी गई थी।

मुख्य वन्यजीव प्रतिपालक शिखा मेहरा के मुताबिक वन्यजीव गणना ग्यारह जून को सुबह आठ बजे से बारह जून सुबह आठ बजे तक होगी। वन्यजीव गणना की वन मुख्यालय से मॉनिटरिंग की जाएगी। वाटर होल पद्धित से वन्यजीव गणना से वन्यजीवों की संख्या के वास्तविक आंकड़े मिल पाएंगे। वन्यजीव गणना से पहले अभ्यास प्रशिक्षण करवाया गया है। रणथंभौर, सरिस्का, मुकुंदरा हिल्स टाइगर रिजर्व में वन्यजीवों की गणना एनटीसीए प्रोटोकॉल से की जाती है। टाइगर रिजर्व के अलावा अन्य सेंचुरी क्षेत्र में वन्यजीवों को वाटर हॉल पद्धित से गिना जाता है। वन्यजीव गणना में भालू, पैंथर, सियागोश, लकड़बग्घे, भेड़िए, सियार, लोमड़ी, जंगली बिल्ली, लंगूर, जंगली सूअर, नीलगाय, सांभर, चीतल, काला हिरण, चिंकारा, नेवला, बिज्जू और से ही को गिना जाएगा। हालांकि प्रदेश में वन्यजीवों की सैकड़ों प्रजातियां हैं।

इस बार करीब 38 प्रजातियों की गणना की जा रही है। वन्यजीव गणना हमेशा पूर्णिमा को ही की जाती है। पूर्णिमा की चांदनी रात को वन्यजीवों की गणना आसानी से हो पाती है। मचान पर बैठे कर्मचारी आसानी से चांदनी रात के उजाले में वन्यजीवों की गिनती आसानी से कर पाते हैं। व